SOCIAL PSYCHOLOGY

B.A. (Hons) Part-III

Paper-V

By- Dr. Ramendra Kumar Singh
H.O.D
Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU, Ara

STEREOTYPE
रूढ़ियुक्तियाँ

समाज मनोविज्ञान के अन्तर्गत स्टेरियोटाइप यानी रूढ़ियुक्तियों के अध्ययन को विशेष महत्व प्राप्त है। यह मानव की सामाजिक व्यवहारों का एक प्रमुख निर्धारक है। वास्तव में स्टेरियोटाइप का अर्थ धातु का प्लेट होता है जिसे मूल साँचे में ढालकर तैयार किया जाता है। यह एक प्रकार की वैसी धारणा होती है जो किसी वर्ग या समूह विशेष के संदर्भ में बनती है। यह धारणा अथवा मानसिक चित्र सकारात्मक अथवा नकारात्मक स्वरूप के हो सकती है।

स्टेरियोटाइप शब्द का समाज मनोविज्ञान में पहली बार प्रयोग वाल्टर लिपमैन (1922) ने किया था। जहाँ तक इसकी परिभाषा का सवाल है तो उस संदर्भ में मनोवैज्ञानिकों ने इसे अलग-अलग ढंग से परिभाषित किया है। यहाँ पर हम उन परिभाषाओं का चर्चा न करके कुछ ऐसी परिभाषाओं का जिक्र करेंगे जो इसके स्वरूप को अधिक से अधिक स्पष्ट करने में सक्षम हैं। ऐसी ही एक संक्षिप्त एवं सरल परिभाषा लिण्डग्रे ने दी है, जो निम्न प्रकार से है:-

"रूढ़ियुक्त शब्द का तात्पर्य समस्त धारणा से है जिसे एक समूह के सदस्य दूसरे समूह के सम्बन्ध में रखता है।"

सेकर्ड एण्ड बैकमैन (1974) द्वारा दी गई परिभाषा काफी स्पष्ट एवं विस्तृत है, जो इसके स्वरूप एवं विशेषताओं पर अधिक से अधिक प्रकाश डालने में सक्षम है। सेकर्ड एवं बैकमैन के अनुसार:-

"रूढ़ियुक्ति प्रारूपण का एक अतिरंजित रूप है जिसकी तीन विशेषताएँ हैं - लोग एक वर्ग को उसकी निश्चित विशेषताओं के अनुरूप पहचानते हैं, व्यक्तियों के उस वर्ग के प्रति निश्चित शीलगुणों या विशेषताओं को आरोपित करने में लोग सहमत होते हैं तथा उस वर्ग के किसी भी व्यक्ति पर उन विशेषताओं को लोग थोप देते हैं।"

इसके स्वरूप स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए मनोवैज्ञानिकों ने इसकी कुछ विशेषताएँ बताये हैं, जो निम्नलिखित हैं:-

(1.) रूढ़ियुक्तियाँ एक मानसिक चित्र या प्रतिमा होती है जो हमारे मानस पटल पर किसी वर्गविशेष के संदर्भ में बनती है। इसमें हम उन्हें उस वर्ग विशेष की विशेषताओं या शीलगुणों के आधार पर उन पर आरोपित कर देते हैं। जैसे गोरखा जुझारू होते हैं, बहादुर होते हैं। अत: हमें उनसे झगड़ा नहीं करना चाहिए।

(2.) यह एक प्रकार की धारणा होती है। यह एक ऐसी धारणा है, जो एक वर्ग के प्रति दूसरे वर्ग के सदस्यों में समान रूप से पाई जाती है। जैसे "पति देवता तुल्य हैं।" ऐसी धारणा प्राय: सभी हिन्दू पत्नियों में पाई जाती है।

(3.) रूढ़ियुक्तियाँ प्राय: स्थाई होती हैं। रूढ़ियुक्तियों परिवर्तन की गुंजाइश कम ही होती है। इसमें बदलाव के प्रति प्रतिरोध पाई जाती है।

(4) रूढ़ियुक्तियाँ सामान्यीकरण (Generalization) पर आधारित होती है। इसमें किसी समूह के सदस्यों में पाई जानेवाली शीलगुणों के आधार पर उस समूह के सभी सदस्यों पर आरोपित कर दिया जाता है। इस तरह इसका Generalization हो जाता है। मुस्लिम धार्मिक रूप से कट्टर होते हैं। यह कोई जरूरी नहीं है पर सभी मुसलमानों के साथ Generalize कर दिया जाता है। इसीलिये सेकर्ड एवं बैकमैन (1964) ने कहा है. "Most stereotypes are undoubtedly gross exaggerations or are completely false."

(5) रूढ़ियुक्तियाँ सकारात्मक या नकारात्मक होती है।- रूढ़ियुक्तियाँ सकारात्मक या नकारात्मक हो सकती है। व्यापारी सहनशील होते हैं।

यह व्यापारी वर्ग के प्रति सकारात्मक स्टेरियोटाइप है। इसी तरह मैथली ब्राह्मण खतरनाक होते हैं। यह Negative Stereotype है।

(6) स्टेरियोटाइप से व्यवहारों की व्याख्या, विश्लेषण एवं भविष्यवाणी किया जा सकता है। इसके द्वारा समूह के व्यवहारों के विषय में जानकारी मिलती है। सैनिक बहादुर होते हैं। ये युद्ध में पीठ नहीं दिखाते। ऐसा स्टेरियोटाइप सैनिकों को युद्ध से भागते से रोकता है। जपानी मेहनती होते हैं। ऐसा धारणा जपानियो के विषय में भविष्यवाणी करने में सहायता प्रदान करता है।

(7) स्टेरियोटाइप की एक विशेषता यह भी है कि इसकी उपयोगिता व्यवसायिक उत्पादों में भी है। विज्ञापन को अधिक सफलीभूत बनाने में यह मदद करता है। "लाइफबॉय तन्दुरुस्ती का राज है" यह स्टेरियोटाइप लाइफबॉय साबुन की बिक्री बढ़ा देता है।

पूर्वाग्रह एवं रूढ़ियुक्तियाँ — Prejudice & Stereotype

रूढ़ियुक्तियाँ एवं पूर्वाग्रह दोनों ही महत्वपूर्ण सामाजिक सम्प्रत्यय है। दोनों में गहरा सम्बन्ध है। दोनों की तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाते हैं, कि दोनों में कुछ समानताएँ अवश्य है, पर दोनो वास्तव में दो अलग-अलग अवधारणाएँ है।

समानताएँ :- दोनों में निम्नलिखित समानताएँ पाई जाती है:-

(i) दोनों प्रधानतः अर्जित होती है। यानी इन्हें हम अपने परिवार एवं परिवेश से ग्रहण करते हैं।

(ii) दोनों का सम्बन्ध किसी व्यक्ति या समूह के पक्ष या विपक्ष से होता है।

(iii) दोनों का सम्बन्ध सामान्यतः संवेग से रहता है।

(iv) दोनों ही व्यक्ति के व्यवहारों का संचालन, नियंत्रण एवं भविष्यवाणी करने में मदद करते हैं।

(v) दोनो द्वारा किसी का परिचय प्राप्त करने में सहायता मिलता है, बढ़े बाल, लम्बा शरीर देखकर जान जाते हैं कि ये हिप्पी है।

रूढ़युक्तियों एवं पूर्वाग्रह में अन्तर :- उपरोक्त समानताओं के बावजूद दोनो में मौलिक अन्तर है। दोनों को अलग-अलग सामाजिक सम्प्रत्यय (Concepts) है। दोनो में निम्नलिखित अन्तर पाया जाता है:-

(1.) पूर्वाग्रह एक विशेष प्रकार की मनोवृत्ति होती है। यह सामान्यत: किसी व्यक्ति अथवा समूह के प्रति होती है जो प्राय: नकारात्मक स्वरूप की होती है। यानी नकारात्मक मनोवृत्ति की पूर्व-धारणा है वो पूर्वाग्रह है।

दूसरी तरह रूढ़युक्तियाँ एक धारणा या प्रतिमा है जिसके आधार पर अवास्तविक वर्गीकरण किया जाता है। व्यक्तियों के प्रति गोरों का नकारात्मक मनोवृत्ति Prejudice है, जबकि कुछ विशेष शीलगुणों या विशेषताओं के आधार पर व्यक्तियों तथा गोरे वर्ग का विभाग Stereotype है। जैसे रंग के आधार पर किया गया वर्गीकरण Stereotype है।

(2.) दोनो में दूसरा प्रमुख अंतर यह है कि पूर्वधारणा की तुलना में रूढ़युक्तियों में स्थिरता (Stability) अधिक पाई जाती है। Stereotype में Rigidity भी अधिक होता है। अत: पूर्वाग्रह की तुलना में रूढ़युक्ति में बदलाव लाना दुष्कर कार्य है।

(3) पूर्वधारणा की तुलना में रूढ़युक्ति में आम सहमति अधिक पाई जाती है। यानी एक समूह के सभी लोगों में समान रूप से पाई जाती है। जैसे सभी हिन्दू औरतों को अपने पति को देवता मानना। पूर्वधारणा लोगों में समान रूप से नहीं पाई जाती है।

(4) फेल्डमैन (1985) के अनुसार रूढ़युक्ति में Cognitive aspect की प्रधानता होती है, जबकि पूर्वधारणा में attitude का सम्बन्ध ज्यादा होता है। इसीलिए इसमें भावात्मक, संज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक तीनों घटकों की प्रधानता होती है।

(5) रूढ़युक्ति में पूर्वधारणा विद्यमान रहती है लेकिन पूर्वधारणा में रूढ़युक्ति विद्यमान नहीं होती है, यानी पूर्वधारणा रूढ़युक्ति के निर्माण में सहायक होता है।

(6) रूढ़ियुक्तियों का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानान्तरण होता है। कुछ रूढ़ियुक्तियाँ हमारे पूर्वजों में पाई जाती थी जो आज भी विद्यमान है, परन्तु Prejudice में ऐसी बातें नहीं होती है। सही शिक्षा या नई जानकारी मिलने पर इसमें बदलाव आ जाता है।

(7) Stereotype का क्षेत्र Prejudice की तुलना में अधिक विस्तृत होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रूढ़ियुक्ति एवं पूर्वधारणाएँ दोनों ही सामाजिक सम्प्रत्यय हैं जो आपस में कुछ ~~सामान्य~~ समानताएँ रखती हैं लेकिन वास्तव में दोनों अलग अलग अभिधारणा होती है जिनका वर्णन ऊपर किया जा चुका है।

रूढ़ियुक्तियों के कारण
Causes of Stereotypes

रूढ़ियुक्तियाँ अर्जित होती हैं। इसकी निर्माण अथवा विकास के लिये कुछ महत्वपूर्ण कारण उत्तरदायी हैं जो निम्नलिखित हैं:-

(1) अज्ञानता:- रूढ़ियुक्तियों की उत्पत्ति में अज्ञानता का बहुत बड़ा हाथ होता है। इतनी विशाल दुनिया के बारे में हम जान नहीं पाये हैं। हमारे पास समय का अभाव होता है। काम अधिक होता है। ऐसी स्थिति में सभी चीजों के विषय में जानकारियाँ मिलना कठिन है। अतः हम Stereotype पाल लेते हैं।

(2) आंशिक वास्तविक अनुभव (Partial actual experience):- रूढ़ियुक्तियों के निर्माण में सच्चाई का आंशिक या हल्का ज्ञान का भी हाथ होता है। कुछ सदस्यों में पाये गये गुणों को हम पूरे उस समाज पर आरोपित कर देते हैं। इस तरह एक धारणा बन जाती है कि अमुक कौम गंदा है या अच्छा है।

(3) अनुकरण:- अनुकरण भी Stereotype को विकसित करने में सहायक होता है। इसमें व्यक्ति अपने समूह के अन्य सदस्यों का अनुकरण

के विचारों एवं व्यवसायों का अनुकरण कर भिन्न-भिन्न तरह की रुढ़ि-युक्तियों को सीख लेता है। जैसे लोग जिनका समूह या समाज में अच्छी प्रतिष्ठा होती है उनकी विचारों के आधार पर हम Stereotype विकसित कर लेते हैं।

परम्परा एवं लोकरीतियाँ :- स्टेरियोटाइप के विकास पर समूह की परम्परा एवं लोकरीतियों का भी प्रभाव पड़ता है। समूह का प्रत्येक सदस्य अपने समूह की परम्पराओं एवं रीतियों की रक्षा करता है। इसलिए यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानान्तरित हो जाती है। सामाजिक दायित्व के निर्वहन के लिए हमे ऐसा करना पड़ता है।

सामाजिक शिक्षण : सामाजिक शिक्षण भी Stereotype के निर्माण एवं विकास का एक प्रमुख कारक है। बन्दूरा आदि इस बात का समर्थन करते हैं। हम प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से Socialization के दौरान प्रचलित रुढ़ियुक्तियाँ सीख लेते हैं।

सामाजिक तथा सांस्कृतिक दूरी :- एक समाज से दूसरे समाज में आदान-प्रदान का अभाव होने से हम दूसरे समाज एवं संस्कृति को पुरी तरह समझ नहीं पाते हैं और Stereotype develop कर लेते हैं। प्रचलित रुढ़ियुक्तियों की समीक्षा किये बगैर हम उसे धारणा कर लेते हैं।

कटु अनुभव : कटु अनुभव से भी Stereotype का निर्माण होता है। अगर कोई व्यक्ति किसी खास जाति के लोगों से धोखा खा जाता है तो वह व्यक्ति उस पुरी जाति के लोगों को धोखेबाज समझने की Stereotype विकसित कर लेता है। फलाँ जाति के लोग धोखेबाज होते हैं" यह Stereotype विकसित हो जाता है।

सांस्कृतिक परम्परा एवं धर्म : कुछ खास तरह की Stereotypes के पीछे सांस्कृतिक परम्पराओं एवं धर्म का भी हाथ होता है। प्रत्येक समाज अपने धर्म एवं संस्कृति का वहन करता है और प्रत्येक धर्म एवं संस्कृति की खास-खास घटनाओं के प्रति खास-खास Stereotype होता है। हम उससे प्रभावित होकर उसे पाल बैठते हैं। धार्मिक प्रचारक उसको प्रचार के माध्यम से एक दूसरे में स्थानान्तरित करते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्टेरियोटाइप एक विशेष प्रकार का मानसिक चित्र होता है, जिसे व्यक्ति किसी समूह या वर्ग विशेष के संदर्भ में धारण कर लेता है, यह एक ऐसी स्थाई स्वरूप की धारणा होती है जिसे हम किसी वर्ग विशेष के कुछ लोगों के शीलगुणों के आधार पर बिना पर्याप्त सूचना के उस की विशेष पर आरोपित कर देते हैं और यह धारणा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानान्तरित होती रहती है। इसकी निर्माण के पीछे कई कारकों का हाथ है। प्रायः लोग जानकारी के अभाव में मनोवृत्ति, पूर्वाग्रह एवं रूढ़ियुक्तियों को एक ही चीज समझ बैठते हैं, लेकिन वास्तव में तीनों में कुछ मौलिक अन्तर होता है जिनका वर्णन ऊपर किया जा चुका है।

रमेन्द्र कुमार
24.08.2020